< ५.विषय-परिचय

जीवस्थानकी पूर्व प्रकाशित दो प्ररुपणाओं-सत्प्ररुपणा और द्रव्यप्रमाणानुगममें क्रमश: जीवका स्वरुप, गुणस्थान व मार्गणास्थानानुसार भेद तथा प्रत्येक गुणस्थान व मार्गणास्थानसंबधी जीवोंका प्रमाण व संस्था बतलाई जा चुकी है । अब प्रस्तुत भागमें जीवस्थानसंबधी आगेकी तीन प्ररुपणाएं प्रकाशित की जा रही है- क्षेत्रानुगम, स्पर्शनानुगम और कालानुगम।

१.क्षेत्रानुगम

क्षेत्रानुगममें जीवोंके निवास व विहारादिसंबधी क्षेत्रका परिणाम बतलाया गया है। इस संबधमें प्रथम प्रश्न यह उठता है कि यह क्षेत्र है कहा? इसके उत्तरमें अनन्त आकाशके दो विभाग किये गये है। एक लोकाकाश और दूसरा अलोकाकाश। लोकाकाश समस्त आकाशके मध्यमें स्थित है, परिमित है और जीवादि पांच द्रव्योंका आधार है। उसके चारो तरफ शेष समस्त अनन्त आकाश अलोकाकाश है। उक्त लोकाकाशके स्वरुप और प्रमाणके संबंधमें दो मत है। एक मतके अनुसार यह लोकाकाश अपने तलभागमें सात राजु व्यासवाला संबंधमे दो मत है। एक मतके अनुसार यह लोकाकाश अपने तलभागमें सात राजु व्यासवाला गोलाकार है। पुन: ऊपरको क्रमसे घटता हुआ अपनी आधी उंचाई अर्थात सात राजुपर एक राजु व्यासवाला रह जाता है। वहांसे पुन:ऊपरको क्रमसे बढता हुआ साढे तीन राजु घटता हुआ अपने सर्वोपरि उच् भागपर एक राजु व्यासवाला रह जाता है। इस मतके अनुसार लोकका आकार ठीक अधोभागमें, वेत्रासन, मध्यमें झल्लरी ओर ऊर्ध्वेभागमें मृदंगके समान हो जाता है। किन्तु धवलाकारने इस मतको स्वीकार नही किया है. क्योंकि ऐसे लोकमें जो प्रमाण लोकका घनफल जगत्श्रेणी अर्थात सात राजुके घनप्रमाण कहा है, वह प्राप्त नही होता। यह बात स्पष्टत: दिखलानेके लिये उन्होंने अपने समयके गणितज्ञानकी विविध और अश्रुतपूर्व क्रियाओं द्वारा इस प्रकारके लोकके अधोभाग व ऊर्ध्वभागका घनफल निकाला है जो कुल १६४ ३२८/ १३५६ घनराजु होनेसे श्रेणीके घन अर्थात ३४३ घनराजुसे बहुत हीन रह जाता है। इसलिए उन्होंने लोकका आकार पूर्वे-पश्चिम दो दिशाओमें सर्वेत्र

तो ऊपरकी ओर पूर्वोक्त क्रमसे घटता बढता हुआ, किन्तु उत्तर - दक्षिण दो दिशाओमें सर्वेत्र सात राजु ही माना है। इस प्रकार यह लोक गोलाकार न होकर समचतुरस्त्रकार हो जाता है और दो दिशाओंमे उसका आकार वेत्रासन, झल्लरी और मृदंगके सदृश भी दिखाई दे जाता है। ऐसे लोकका प्रमाण ठीक श्रेणीका घन ७ = ७ x ७ x ७ = ३४३ घनराजु हो जाता है। यही लोक जीवादि पांचो द्रव्योंका क्षेत्र है।

यहां प्रश्न यह उपस्थित होता है कि उक्त ३४३ घनराजुप्रमाण केवल असंख्यात प्रदेशात्मक अत्यन्त परिमित क्षेत्रमे अनन्त जीव व अनन्त पुद्गल परमाणु कैसे रह सकते है? इसका उत्तर यह है कि जीवों और पुदग्ल-परमाणुओंमें अप्रतिघातरुपसे अन्योन्यावगाहन शक्ति विद्यमान है जिसके कारण अंगुलके असंख्यातवें भागमें भी अनन्तानन्त जीवोंका और जीवके भी प्रत्येक प्रदेशपर अनन्त औदारिकादि पुद्गल परमाणुओंका अस्तित्व बन जाता है।

ओघ अर्थात गुणस्थानोंकी अपेक्षा जीवोंका क्षेत्र ४ सूत्रोमें बतला दि.या गया है कि मिथ्यादृष्टि जीव सर्वेलोकमे व अयोगिकेवली और शेष सासादनसम्यग्दृष्टि आदि समस्त बारह गुणस्थानोमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोकके असंख्यातवें भागमें, और सयोगिकेवली लोकके असंख्यातवे भागमें, ्असंख्यात बहु भागोमे, तथा सर्वलोकमें रहते है। धवलाकारने इन सूत्रवचनोंको एक ओर जीवोकी नाना अवस्थाओंका विचार करके, और दूसरी ओर सूक्ष्मतर क्षेत्रमानके लिये लोकको पांच विभागोंमे बांटकर बडे विस्तारसे समझाया है।

क्षेत्रावगाहनाकी अपेक्षासे जीवोंकी तीन अवस्थाएं हो सकती है (१) स्वस्थान (२) समुध्दात और (३) उपपाद । स्वस्थान भी दो प्रकारका है - अपने स्थायी निवासके क्षेत्रकी स्वस्थान-स्वस्थान, और अपने विहारके क्षेत्रको विहारवत्स्वस्थान कहते है । जीवके प्रदेशोका उनके स्वाभाविक संगठनसे अधिक फैलना समुध्दात कहलाता है। वेदना और पीडाके कारण जीवप्रदेशोंके फैलनेको वेदनासमुध्दात कहते है। क्रोधादि कषायोंके कारण जीवप्रदेशोंके विस्तारको कषायसमुध्दात कहते है। इसी प्रकार अपने स्वाभाविक शरीरके आकारको पूरी तरह छोडकर अन्य शरीराकार परिवर्तनको वैक्रियिकसमुध्दात, मरनेके समय अपने पूर्व शरीरको न छोडकर नवीन उत्पत्तिस्थान तक जीव- प्रदेशोकें विस्तारको मारणान्तिक , तैजसशरीरकी अप्रशस्त व प्रसस्त विक्रियाको तैजससमुध्दात, ऋध्दिप्राप्त मुनियोंके शंका-निवारण आदिके लिए कुछ जीवप्रदेशोंको प्रस्तारको आहारकसमुध्दात , और सर्वज्ञताप्राप्त केवलीके प्रदेशोंका आयुकर्मको छोडकर शेष कर्मक्षय-निमित्त दंडाकारस कपाटाकार, प्रतराकर व लोकपूरणरुप प्रस्तारको केवलिसमुध्दात कहते है- जीवका अपनी पूर्व पर्यायको छोडकर तीरके समान सीधे व एक, दो या तीन मोडे लेकर अन्य पर्योयके ग्रहणक्षेत्र तक गमन करनेकी उपपाद कहते है। इन्ही दश-अर्थोत (१)स्वस्थानस्वस्थान (२) विहारवत्स्वस्थान (३) वेदनासमुध्दात (४) कषायसमुध्दात (५) वैकियिकसमुध्दात (६) मारणान्तिकसमुध्दात (७) तैजससमुध्दात (८)

आहारकसमुध्दात (९) केव्रलिसमुध्दात और (१०) उपपाद अवस्थाओंकी अपेक्षासे यथासम्भव अपने अपने भिन्न भिन्न गुणस्थानों और मार्गणास्थानों स्थित जीवोंकेक्षेत्रप्रमाणकी इस क्षेत्रप्ररुपणामें बतलाया गया है।

सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम क्षेत्रमानके लिये धवलाकारने पांच प्रकारसे लोकका ग्रहण किया है (१) समस्त लोक या सामान्य लोक जो ७ राजुका घनप्रमाण है, (२) अधोलोक जो १९६ घनराजुप्रमाण है, (३) ऊर्ध्वलोक जो १४७ घनराजुप्रमाण है ९४) तिर्यक्लोक या मध्यलोक जो १ राजूके प्रतर या वर्गप्रमाण है, और (५) मनुष्यलोक जो अढाई ्द्वीपप्रमाण, अर्थात ४५ लाख व्यासवाला वर्तुलाकार क्षेत्र है। किसी भी प्रकारके जीवोंका क्षेत्रमान बतलानेके लिये धवलाकारने उस उस जातिशेषवाली प्रधान राशिको लेकर उसके क्षेत्रावगाहनका विचार किया है। उदाहरणार्थे - विहारवत्स्वनवाले मिथ्यादृष्टियोंकेक्षेत्रका विचार करते समय उन्होंने त्रसपर्याप्तराशिको ही विहार करनेकी योग्यता रखनेवाली मानकर पहले यह निर्दिष्ट कर दिया कि किसी भी समयमें इस राशिका संख्यातवां भाग ही विहार करेगा। फिर उन्होनें इस विहार करनेवाली राशिमें स्वयंप्रभनागेन्द्र पर्वतके परभागवर्ती बडे बडे त्रस जीवोंका विचार किया, जिनमें द्वीन्द्रिय जीव शंक बीरह योजनका, त्रीन्द्रिय गोम्ही तीन कोसकी, चतुरिन्द्रिय भ्रमर एक योजनका और पंचेन्द्रिय मच्छ एक हजार योजनका होता है। अतएव ऐसे प्रत्येक जीवका उन्होंने क्षेत्रमितीके सूत्र व विधान देकर प्रमाणांगुलोंमे घनफल निकाला और फिर इस उत्कृष्ट अवगाहनमें जघन्य अवगाहनका अंगुलका असंख्यातवां भाग जोडकर उसका आधा किया जिससे उस राशिके एक जीवकी मध्यम अर्थात औसत अवगाहना संख्यात घनागुंल आ गई। समस्त त्रस पर्याप्तराशि प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको पुर्वोक्त घनफलसे गणा करनेपर विहारवत्स्वस्थान मिथ्यादृष्टिराशिका क्षेत्र संख्यात सूच्यंगुलगुणित जगढप्रतरप्रमाण होता है, जो लोकका असंख्यातवां भाग, और उसी प्रकार अधोलोक और ऊर्ध्वेलोकका भी असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मनुष्यालोक या अढाईद्वीपसे असंख्यात गुणा होगा।

२.स्पर्शनानुगम

स्पर्शनप्ररुपणामें यह बतलाया गया है कि भिन्न भिन्न गुणस्थानवाले जीव, तथा गति आदि भिन्न भिन्न मार्गणास्थानवाले जीव तीनों कालोंमें पुर्वोक्त दश अवस्थाओंद्वारा कितना क्षेत्र स्पर्श कर पाते है। इससे स्पष्ट है कि क्षेत्र और स्पर्शन प्ररुपणाओमें विशेषता इतनी ही है कि क्षेत्रप्ररुपणा तो केव्रल वर्तेमानकालकी ही अपेक्षा रखती है, किन्तु स्पर्शन प्ररुपणामें अतीत और अनागतकालका भी, अर्थात तीनों कालोंका क्षेत्रमान ग्रहम किया जाता है।

उदाहारणार्थ - क्षेत्रप्ररुपणामें सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र लोकका असंख्यातवां भाग बताया गया है। यह क्षेत्र वर्तमानकालसे ही सम्बन्ध रखता है, अर्थोंत वर्तेमानमें इस समय स्वस्थानादि यथासंभव पदोको प्राप्त सासादनसम्यग्दृष्टि जीव लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण क्षेत्रको व्याप्त करके विद्यमान है। यही बात स्पर्शनप्ररुपणामें वर्तमानकालिक स्पर्शनको बताते समय कही है। उसकेपश्चात दूसरे सूत्रमें अतीतकालसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र बतलाया गया है कि सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोनें अतीतकालमें देशोन आठ बटे चैादह (८/१४) और बारह बटे चौदह (१२/२४) भाग स्पश किए है। इसका अभिप्राय जान लेना आवश्यक है। ती न सौ तेतालीस घनराजूप्रमित इस लोकाकाशके ठीक मध्य भागम् वृक्षमें सारकेसमान एक राजु लम्बी चौडी और चौदह राजु ऊंची लोकनाली अवस्थित है। इसे त्रसनाली भी कहते है, क्योकि, त्रसजीवोंका संचार इसकेही भीतर होता है। केव्रल कुछ अपवाद है, जिनमें कि इसकेभी बाहर त्रसजीवोंका पाया जाना संभव है । इस त्रसनालीके एक एक राजु लम्बे, चौडे और मोटे भाग बनाए जावें तो चौदह भाग होते है। उनमेंसे जो जीव जितने घनराचुप्रमाण क्षेत्रको स्पर्श करता है, उसका उतना ही स्पर्शनक्षेत्र माना जाता है। जैसे प्रकृतमें सासादन सम्यग्दृष्टियोंका स्पर्शनक्षेत्र आठ बटे चौदह (८/१४) या बारह बटे चौदह (१२/१४) भाग बताया गया है। इनमेंसे विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुध्दातगत सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोने उक्त त्रसनालीकेचौदह भागोमेंसे आठ भागोंको स्पर्श किया ह, अर्थात आठ घनराजुप्रमाण त्रसनालीके भीतर ऐसा एक प्रदेश नही है कि जिसे अतीतकालमें सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोनें (देव, मनुष्य, तिर्यच और नारकी, इन सभीने मिलकर) स्पर्शन किया हो। यह आठ घनराजुप्रमाण क्षेत्र त्रसनालीके भीतर जहा कही नही लेना चाहिए, किन्तु नीचे तीसरी वालुका पृथिवीसे लेकर ऊपर सोलहवे अच्युतकल्प तक लेना चाहिये। इसका कारण यह है कि भवनवासी देव स्वत: नीचे तीसरी पृथिवी तक विहार करते है, और ऊपर सौधर्मविमानके शिखरध्वजदंड तक। किन्तु उपरिम देवोंके प्रयोगसे ऊपर अच्युतकल्प तक भी विहार कर सकते है (देखो, पृ, २२९) । उनके इतने क्षेत्रमें विहार करनेके कारण उक्त क्षेत्रका मध्यवर्ती एक भी आकाश-प्रदेश ऐसा नही बचा है कि जिसे अतीत कालमें उक्त गुणस्थानवर्ती जीवोनें लोकनालीके चौदह भागोमेंसे बारह भाग स्पर्श किये है। इसका अभिप्राय यह है कि छठी पृथिवीकेसासादनगुणस्थानवर्ती नारकी मध्यलोक तक मारणान्तिकसमुध्दात कर सकते है, और सासादनसम्यग्दृष्टि भवनवासी आदि देव आठवी पृथिवीके ऊपर विद्यमान पृथिवीकायिक जीवोमें मारणान्तिकसमुध्दात कर सकते है, या करते है। इस प्रकार मेरुतलसे छठी पृथिवी तकके ५ राजु, और ऊपर लोकान्त तकके ७ राजू दोनों मिलाकर १२ राजु हो जाते है। यही बारह घनराजुप्रमाण क्षेत्र त्रसनालीके बारह बटे चौदह (१२/१४) भाग, अथवा त्रसनालीके चौदह भागोंसे बारह भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र कहा जाता है।

इस उक्त प्रकारसे बतलाए गए स्पर्शनक्षेत्रको यथासंभव जान लेना चाहिए। ध्यान रखनेकी बात केवल इतनी ही है कि वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्र तो लोकके असंख्यातवे भागप्रमाण होता है, किन्तु अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र त्रसनालीके चौदह भागोमेंसे यथासंभव को आदि लेकर १२/१४ तक होता है। मिथ्यादृष्टि जीवोंका मारणान्तिक, वेदना, कषायसमुध्दात आदिकी अपेक्षा सर्व लोक स्पर्शनक्षेत्र होता है, क्योंकि, सारे लोकमे सर्वत्र ही एकेन्द्रिय जीव ठसाठस भरे हुए है और गमनागमन कर रहे है, अतएव उनके द्वारा समस्त लोकाकाश वर्तमानमें भी स्पर्श हो रहा है ओर अतीतकलमें भी स्पर्श किया जा चुका है।

इन एकेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके अतिरिक्त सयोगिकेवली भगवान् भी प्रतरसमुध्दातके समय लोकके असंख्यात बहु भागोंकी और लोकपूरणसमुध्दातके समय सर्व लोकाकाशको स्पर्श करते है। तथा उपपाद और मारणान्तिकसमुध्दातवाले त्रसजीवोंका भी त्रसनालीके बाहर अस्तित्व पाया जाता है। वह इस प्रकारसे कि लोकके अन्तिम वातवलयमें स्थित कोई जीव मरण करे विग्रहगतिद्वारा त्रसनालीके अन्त: स्थित त्रसपर्योमें उत्पन्न होनेवाला है वह जीव जिस समय मरण करके प्रथम मोडा लेता है, उस समय त्रसपर्याप्तको धारण करने पर भी वह त्रसनालीके बाहर है, अतएव उपपादकी अपेक्षा त्रसजीव त्रसनालीके बाहर रहता है। इसी प्रकार त्रसनालीमें स्थित किसी ऐसे त्रसजीवने जिसे कि त्रसनालीके बाहर मरकर उत्पन्न होना है मारणान्तिकसमुध्दातके द्वारा त्रसनालीके बाहरके आकाश-प्रदेशोंका स्पर्श किया, तो उस समय भी त्रसजीवका अस्तित्व त्रसनालीके बाहर पाया जाता है, (देखो, पृ, २१२) । उक्त तीन अवस्थाओंको छोडकर शेष त्रसजीव त्रसनालीके बाहर कभी नही रहते है।

इस प्रकार चौदह गुणस्थानों और चौदह मार्गणास्थानोंमे उक्त स्वस्थानादि दश पदोंको प्राप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र इस स्पर्शनप्ररुपणामें बतलाया गया है।

स्पर्शप्ररुपणाकी कुछ विशेष बातें

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र निकालते हुए प्रसंगवश असंख्यात द्वीप-समुद्रोंके ऊपर आकाशमें स्थित समस्त चंद्रोके प्रमाणको भी गणितशास्त्रके अनेक अद्ष्टपूर्व करणसूत्रोंके द्वारा निकाला गया है और साथ ही यह बतलाया गया है कि एक चंद्रके परिवारमें एक सूर्ये अठासी ग्रह, अट्टईस नक्षत्र और छ्यासठ हजार नौसौ पचहत्त्र कोडकोडी (६६९७५००००००००००००००) तारे होते है। इस चारों प्रकारके परिवारके प्रमाणसे चन्द्रबिम्बोंकी संख्याको गुणा कर देनेपर समस्त ज्योतिष्क देवोंका प्रमाण निकला आता है।

इसी बीचमें धवलाकारने ज्योतिष्क देवोंके भागहारको उत्पन्न करनेवाले सूत्रसे अवलम्बित युक्तिके बलसे यह सिध्द किया है कि चूंकि - स्वयंभूरमणसमुद्रके परभागमें भी राजुके अर्धच्छेद पाये जाते है, इसलिए स्वयंभूरमणसमुद्रके परभागमें भी असंख्यात द्वीप-समुद्रोंके व्यास-रुध्द योजनोंसे संख्यात हजार गुने योजन आगे जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है, अर्थात स्वयंभूरमणसमुद्रकी बाह्यवेदिकाको परे भी पृथिवीका अस्तित्व है, वहां भी राजुके अर्धच्छेद उपलब्ध होते है, किन्तु वहांपर ज्योतिषी देवोंकेविमान नही है। (देखो पृ १५०-१६०)

इसी प्रकरणमें उन्होंने अपनी उक्त बातकी पुष्टि करते हुए जो उदाहरण दिए है, उनसे एकदम तीन ऐसी बातोंपर प्रकाश पडता है, जिनसे पता चलता है कि वे बातें वीरसेनाचार्योकेपूर्ववर्ती दिगम्बर साहित्यमें प्रतिष्टित नही थी और सर्व प्रथम इन्हीनें उनकी प्रतिष्ठा की है।

वे नवीन प्रतिष्ठित तीनों बातें इस प्रकार है-

(१) संख्यात आवलियोंका एक अन्तर्मुहुर्त होता है इस प्रचलित और सर्वमान्य मान्यतो को भी एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेण (द्रव्य, सू ६) इस सूत्रके आधरसे अन्तमुहुर्त इस पदमें पडे हुए अन्तर शब्दको सामीप्यार्थक मानकर यह सिध्द किया है कि अन्तर्मुहुर्तेका अभिप्राय मुहुर्तसे अधिक कालका भी हो सकता है।

(२) दूसरी बात आयतचतुरस्त्र लोक-संस्थानकेउपदेशकी है, जिसका अभिप्राय समझनेकेलिये इसी भागके पृ. ११ से २२ तकका अंश देखिए। उससे ज्ञात होता है कि धवलाकारकेसामने विद्यमान करणानुयोगसम्बन्धी साहित्यमें लोकके आयतचतुस्त्राकार होनेका विधान या प्रतिषेध कुछ भी नही

मिल रहा था तो भी उन्होने प्रतरसमुध्दातगत केवलीके क्षेत्रके साधनार्थ कही गई दो गाथाओंके (देखो इसी भागके पृ, २०-२१) आधारपर यही सिध्द किया है कि लोकका आकार आयतचतुष्कोण है, न कि अन्य आचार्योसे प्ररुपित १६४ ३२८ घनराजु प्रमाण मृदंगके आकार। साथ ही १३५६ उनका कहना है कि यदि ऐसा न माना जायगा तो उक्त दोनों गाथाओंको अप्रमाणता और लोकम् ३४३ घनराजुओंका अभाव प्राप्त होगा। इसलिए लोकका आकार आयतचतुरस्त्र ही मानना चाहिए।

(३) तीसरी बात स्वयंभूरणसमुद्रके परभागमें पृथिवीके अस्तित्व सिध्द करनेकी है जिसका उल्लेख पूर्वमेंही किया जा चुका है। (देखो पृ, १५५-१५८ तक)

इस प्रकार बडे जोरदार शब्दोमें उक्त तीनो बातोंका समर्थन करनेके पश्चात भी उनकी निष्पक्षता दर्शनीय है। वे लिखते है - यह ऐसा ही है इस प्रकार एकान्त हठ पकड करके असद् आग्रह नही करना चाहिए, क्योंकि, परमगुरुओंकी परम्परासे आए हुए उपदेशको युक्तिके बलसे अयथार्थ सिध्द करना अशक्य है, तथा अतीन्द्रिय पदार्थोमें छद्मस्थ जीवोंके द्वारा उठाए गए विकल्पोंके अविसंवादी होनेका नियम नही है। अतएव पुरातन आचार्योके व्याख्यानका परित्याग न करके हेतुवाद (तर्कवाद) के अनुसरण करनेवाले व्युत्पन्न शिष्योंके अनुरोधसे तथा अव्युत्पन्न शिष्यजनोंके व्युप्तादनके लिये यह दिशा भी दिखना चाहिए। (देखो पृ, १५७-१५८)

तिर्यचोंके स्वस्थानस्वस्थानक्षेत्रको निकालते हुए द्वीप और समुद्रोंका क्षेत्रफल अनेक करणसूत्रों द्वारा पृथक पृथक और सम्मिलित निकालनेकी प्रक्रियाएं दी गई है, और साथ ही यह भी सिध्द किया गया है कि इस मध्यलोंकमे कितना भाग समुद्रसे् रुका हुआ है।

(देखो. पृ. १९४-२०३)

कायमार्गणामें बादर पृथिवीकायिक जीवोंके स्पर्शन-क्षेत्रको बतलाते हुए रत्नप्रभादि सातों पृथिवीयोंकी लम्बाई चौडाईका भी प्रमाण बतलाया गया है।

३. कालानुगम

उक्त प्ररुपणाओंके समान कालप्ररुपणामें भी ओघ और आदेशकी अपेक्षा कालका निर्णय किया गया है, अथात यह बतलाया गया है कि यह जीव किस गुणस्थान या मार्गणास्थानमें कमसे कम कितने काल तक रहता है, और अधिकसे अधिक कितने काल रहता है।

उदाहरणार्थ-मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्वगुणस्थानमें कितने काल तक रहते है । इस प्रश्नके गुणस्थानोंकी अपेक्षा जीवोंका क्षेत्र,स्पर्शन और कालका प्रमाण

गुणस्थान	क्षेत्र	स्पर्शन		नानाजीवोंकी अपेक्षा	काल एकजीवकी अपेक्षा	
		वर्तमानकालिक	अतीत अनागतकालिक		जघन्यकाल	उत्कृष्टकाल
१मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	(सा सा मि) अन्तर्मुहुर्त	देशोन अर्ध पुग्दलपरिवर्तन
२ सासादनसम्यग्दृष्टि	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	देशोन ८/१४ और १२/१४	जघन्य उत्कृष्ट एकसमय पल्यो. असं, भाग	एकसमय	छह आवली
३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	देशोन ८/१४ राजु	अन्तर्मुहुर्त ,,	अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त
४ असंयतसम्यदृष्टि	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	देशोन ८/१४ राजु	सर्वकाल	सर्वकाल	साधिक तेतीस सागरोपम
५ संयतासंयत	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	देशोन ६/१४ राजु	सर्वकाल	सर्वकाल	देशोन पूर्वकोटी
६ प्रमतसंयत	लोकका	लोकका असंख्यातवा	लोकका	सर्वकाल	एकसमय	अन्तर्मुहुर्त

	असंख्यातवा भाग	भाग	असंख्यातवा भाग			
७ अप्रमतसंयत	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	सर्वकाल	एकसमय	अन्तर्मुहुर्त
८ अपूर्वकरण	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	जघन्य उत्कृष्ट उप० एकसमय अन्तर्मुहुर्त क्षपक० अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त	एकसमय अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त
९ अनिवृतिकरण	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	उप० एकसमय अन्तर्मुहुर्त क्षपक० अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त	एकसमय अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त
१० सूक्ष्मसाम्पराय	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	उप० एकसमय अन्तर्मुहुर्त क्षपक० अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त	एकसमय अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त
११ उपशान्तकषाय	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	एकसमय अन्तर्मुहुर्त	एकसमय	अन्तर्मुहुर्त

१२ क्षीणमोह	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त
१३ सयोगिकेवली	लोकका असंख्यातवा भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवा भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवा भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन पूर्वकोटी वर्ष
१४ अयोगिकेवली	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	लोकका असंख्यातवा भाग	अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त

मार्गणास्थानोंकी अपेक्षा जीवोंके क्षेत्र, स्पर्शन और कालका प्रमाण

मार्गणा	मार्गणाके अवान्तर भेद	क्षेत्र	स्पर्शन		नाना जीवोंकी अपेक्षा	काल एकजीवकी अपेक्षा	
			वर्तमानकालिक	अतीत अनागतकालिक		जघन्यकाल	उत्कृष्टकाल

१ गतिमार्गणा	नरकगति	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ६/१४ राजु (उत्कृष्ट)	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	तेतीस सागरोपम
	तिर्यचगति	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	अनन्तकाल असंख्यात पुदगलपरिवर्तन
	मनुष्यगति	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	तीन पल्योपम और पूर्वकोटीपृथक्त्व
	देवगति	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ और ९/१४ राजु (उत्कृष्ट)	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	तेतीस सागरोपम
२ इन्द्रियमार्गणा	एकेन्द्रिय	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	क्षूद्रभवग्रहण I	अनन्तकाल असंख्यात पुदगलपरिवर्तन
	विकलत्रय	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	सर्वलोक	सर्वकाल	क्षूद्रभवग्रहण I	संख्यात हजार वर्ष

	पंचेन्द्रिय	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	एक हजार सागरोपम पुर्वकोटीपृथक्त्वसे अधिक
३ कायमार्गणा	पाच स्थावरकायिक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	क्षूद्रभवग्रहण	अनन्तकाल असंख्यात पुदगलपरिवर्तन
	त्रसकायिक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	दो हजार सागरोपम पुर्वकोटीपृथक्त्वसे अधिक
४ योगमार्गणा	मनोयोगी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	एकसमय	अन्तर्मुहुर्त
	वचनयोगी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	एकसमय	अन्तर्मुहुर्त

www.jainworld.com

	काययोगी	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	एकसमय	अनन्तकाल असंख्यात पुदगलपरिवर्तन
५ वेदमार्गणा	स्त्रीवेदी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ और ९/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	पल्योपमशतपृथत्व
	पुरुषवेदी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ और ९/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	सागरोपमशतपृथत्व
	नपुसकवेदी	लोकका सर्वलोक भाग	लोकका सर्वलोक भाग	देशोन ८/१४ और ९/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	अनन्तकाल असंख्यात पुदगलपरिवर्तन
	अपगतवेदी	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	जघन्य | उत्कृष्ट	अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त देशोन पूर्वकोटी वर्ष

					एकसमय अन्तर्मुहुर्त सर्वकाल अन्तर्मुहुर्त सर्वकाल		
६ कषायमार्गणा	क्रोधादिक चतुष्कषायी	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	एकसमय	अन्तर्मुहुर्त

	अकषायी	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	अन्तर्मुहुर्त और सर्वकाल	एकसमय अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त और देशोन पूर्वकोटी वर्ष
७ ज्ञानमार्गणा	कुमति-कुश्रुतज्ञानी	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन अर्धपुदगलपरिवर्तन
	विभंगज्ञानी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन तेतीस सागरोपम
	मति श्रुत अवधि०	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु लोकका असंख्यातवां भाग	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	साधिक तेतीस सागरोपम
	मन: पर्ययज्ञानी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन पूर्वकोटी वर्ष

	केवलज्ञानी	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन पूर्वकोटी वर्ष
८ संयममार्गणा	सामायिक आदि चार संयमी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	जघन्य ,, उत्कृष्ट एकसमय । अन्तर्मुहुर्त	एकसमय	अन्तर्मुहुर्त

	यथाख्यात संयमी	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	एकसमय सर्वकाल अन्तर्मुहुत अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त देशोन पूर्वकोटी वर्ष
	संयमासंयमी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ६/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन पूर्वकोटी वर्ष
	असंयमी	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन अर्धपुदगलपरिवर्तन
९ दर्शनमार्गणा	अचक्षुदर्शनी	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	अनन्तकाल असंख्यात पुदगलपरिवर्तन
	चक्षुदर्शनी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	दो हजार सागरोपम
	अवधिदर्शनी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	साधिक तेतीस सागरोपम

	केवलदर्शनी	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन पूर्वकोटी वर्ष
१० लेश्यामार्गणा	कृष्ण	सर्वलोक लोकका असंख्यातवां भाग	सर्वलोक लोकका असंख्यातवां भाग	सर्वलोक देशोन ५/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	साधिक तेतीस सागरोपम
	नील	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	सर्वलोक देशोन ४/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	साधिक सत्तरह सागरोपम
	कापोत	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	सर्वलोक देशोन २/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	साधिक सात सागरोपम
	तेज	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ और ९/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त एकसमय	साधिक दो सागरोपम
	पद्म	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त एकसमय	साधिक अठारह सागरोपम

	शुक्ल	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त एकसमय	साधिक तेतीस सागरोपम
	अलेश्य	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	अन्तर्मुहुर्त अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त
११ भव्यमार्गणा	भव्य	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन अर्धपुदगलपरिवर्तन

	अभव्य	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	अनादि अनन्त
१२ सम्यक्त्वमार्ग	औपशमिकसम्यक्त्व	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु	अन्तर्मुहुर्त पल्यो. असं. भाग एकसमय अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त एकसमय	अन्तर्मुहुर्त
	क्षायोपमिकसम्यक्त्व	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	साधिक छयासठ सागरोपम

	क्षायिक सम्यक्त्व	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	लोकका असंख्यातवां भाग लोकका असंख्यात बहु भाग सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	साधिक तेतीस सागरोपम
	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु	अन्तर्मुहुर्त पल्यो. असं. भाग	अन्तर्मुहुर्त	अन्तर्मुहुर्त
	सासादनसम्यग्दृष्टि	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ९/१४ और १२/१४ राजु	एकसमय पल्यो. असं. भाग	एकसमय	अन्तर्मुहुर्त
	मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	देशोन अर्धपुदगलपरिवर्तन
१३ संज्ञिमार्गणा	संज्ञी	लोकका असंख्यातवां भाग	लोकका असंख्यातवां भाग	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त	सागरोपमशतपृथत्व

	असंज्ञी	सर्वलोक	सर्वलोक	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	क्षूद्रभवग्रहण ।	अनन्तकाल असंख्यात पुदगलपरिवर्तन
१४ आहारमार्गणा	आहारक	सर्वलोक	सर्वलोक	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	क्षूद्रभवग्रहण ।	अंगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण
	अनाहारक	सर्वलोक	सर्वलोक	देशोन ८/१४ राजु सर्वलोक	सर्वकाल	अन्तर्मुहुर्त एकसमय	असंख्यातसंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी तीन समय, अन्तर्मुहुर्त

उतरमे बतलाया गया है कि नाना जीवोंकी अपेक्षा तो मिथ्यादृष्टि जीव सर्वकाल ही मिथ्यात्व गुणस्थानमे रहते है, अर्थात तीनो कालोंमे ऐसा एक भी समय नही है, जब कि मिथ्यादृष्टि जीव न पाय जाते हो । किन्तु, एक जीवकी अपेक्षा मिथ्यात्वका काल तीन प्रकारका होता है- अनादि अनन्त, अनादि सान्त और सादि-सान्त । जो अभव्य जीव है अर्थात त्रिलोकमे भी जिनको सम्यक्त्वकी प्राप्ति नही होना है, ऐसे जीवोके मिथ्यात्वका काल अनादि-अनन्त होता है, क्योंकि, उनके मिथ्यात्वका न कभी आदि है, न अन्त । जो अनादिमिथ्यादृष्टि भव्य जीव है उनके मिथ्यात्वका काल अनादि-सान्त है अर्थात अनादि कालसे आज तक सम्यक्त्वकी प्राप्ति न होनेसे तो उनका मिथ्यात्व अनादि है किन्तु आगे जाकर सम्यक्त्वकी प्राप्ति और मिथ्यात्वका अन्त हो जानेसे वह मिथ्यात्व सान्त है । धवलाकारने इस प्रकारके जीवोमेसे वर्द्धनकुमारका दृष्टान्त दिया है,

जो कि उस पर्यायमे सर्व प्रथम सम्यक्त्वी हुए थे । इस प्रकार सर्व प्रथम सम्यक्त्वको उत्पन्ना करनेवाले जीवोके सम्यक्त्व प्राप्तिके पूर्व समय तके उनके मिथ्यात्वका काल अनादि-सान्त समझना चाहिए । जिन जीवोंमे एक बार सम्यक्त्वको प्राप्त कर लिया तथापि परिणामोके संक्लेशादि निमित्तसे जो फिर भी मिथ्यात्वको प्राप्त हो जाते है उनके मिथ्यात्वका काल सादि-सान्त माना जाता है क्योकि उनके मिथ्यात्वका आदि और अन्त ये दोनो पाये जाते है । इस प्रकारके जीवोमे भी श्रीकृष्णका दृष्टांन्त धवलाकारने दिया गया ।

प्रकृतमे अनादि-अनन्त ओर अनादि-साप्त मिथ्यात्वके कालको छोडकर सादि-सान्त मिथ्यात्वकालकी ही विवक्षा की गई है और उसीकी अपेंक्षा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानका जघन्य और उत्कृष्ट काल बतलाया गया है ।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानका जघन्य काल अन्तर्मुहुर्त बतलाया गया है जिसका अभिप्राय यह है कि, यदि कोई सम्यग्मिथ्यादृष्टि या असंयतसम्यदृष्टि या संयतासंयत या प्रमतसंयत जीव परिणामोके निमित्तसे मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ और मिथ्यात्वदशामे सबसे छोटे अन्तर्मुहुर्तकाल तक रहकर पुन; सम्यग्मिथ्यात्वको या असंयतसम्यक्त्वको या, संयातासंयम अथवा अप्रमतसंयतमको प्राप्त हो गया, तो ऐसे जीवके मिथ्यात्वका जधन्यकाल अन्तर्मुहुर्तप्रमाण पाया जाता है । ऐसे मिथ्यात्वको सादि-सान्त कहते है, क्योंकि, उसका आदि और अन्त दोनो पाये जाते है । इसी सादि सान्त मिथ्यात्वका उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्धपुदगलपरिवर्तन प्रमाण है । इसका अभिप्राय यह है कि जब कोई जीव प्रथम बार सम्यक्त्वी होकर पुन: मिथ्यात्वी हो जाती है तो वह अधिकसे अधिक अर्धपुदगलपरिवर्तनकालके भीतर अवश्य ही पुन: सम्यक्त्व प्राप्त कर मोक्ष चला जाता है । (अर्धपुदगलपरिवर्तनकालके लिये देखिये पृ. ३२५-३३२)

इसी प्रकार शेष गुणस्थानोके भी जघन्य और उत्कृष्ट काल बतलाये गये है ।

>

BACK